शब्द-ब्रह्म E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि का अध्ययन

डॉ. प्रज्ञा श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
सौरभ टी.टी. कॉलेज
करौली, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक लब्धि का स्तर क्या है। न्यादर्श हेतु जयपुर शहर के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कलावर्ग के 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्राएं) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है। किशोरों की सामाजिक लब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित सामाजिक लब्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्ययान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। परिणाम बताता है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कलावर्ग के छात्र एवं छात्राओं, निजी विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना

शिक्षा ने आज औद्योगिक विकास, आर्थिक संरचना, राजनैतिक जीवन, सामाजिक पूर्ण निर्माण और व्यक्तित्व के विकास को एक दूसरे से सम्बन्धित कर दिया है। यही कारण है कि आधुनिक समाज में शिक्षा को सामाजिक नियंत्रक के एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप से देखा जाता है।

आज के युग में हम बालकों को वह शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं, जिसकी वह हकदार है। स्वामी विवेकानंन्द का कथन है कि हमें वह शिक्षा देनी चाहिए जिससे व्यक्ति चरित्रवान बनता है और उसकी प्रतिभा व मन की शक्ति का विस्तार होता है। सामाजिक लब्धि को आधार बनाकर ही भविष्य की शिक्षा का सही स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। वर्तमान शिक्षा के भीतर सामाजिक संस्कारों को पैदा करने वाली शक्तियों की आवश्यकता हमेशा से महसूस की गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज में बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाने का कार्य सामाजिक शिक्षा ही कर सकती है। जिससे वह जीवन का स्वरूप समझ सके और इसमें आत्मनिर्भर बनने की क्षमता व कर्मठता उत्पन्न हो सके। किशोरों में व्यक्तिगत विभिन्नताएं पाई जाती हैं। प्रत्येक किशोर की विभिन्न सामाजिक क्षमता जैसे नैतिक, आध्यात्मिक मूल्य, बुद्धि, कल्पना शक्ति निर्णय, तर्क शक्ति आदि के सन्दर्भ में दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती है। सामाजिक लब्धि व्यक्ति के सामाजिक स्तर को व्यक्त करती है। परम्परागत सामाजिक मूल्यों एवं वर्तमान मूल्यों को यथार्थ के धरातल पर रखकर उनके समन्वय पर बल देना ही सामाजिक लब्धि का सही अर्थ है। आज के किशोरों को इन्हीं मूल्यों की ज्ञान प्राप्ति की उपलब्धि ही सामाजिक लब्धि है अर्थात् शैक्षिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों की जानकारी की प्रतिद्गातता का मापदण्ड किशोरों की सामाजिक लब्धि का

शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्तर बताता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के किशोरों में सामाजिक लब्धि का स्तर क्या है।

उद्देश्य

सरकारी एंव निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कलावर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना

सरकारी विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निजी विद्यालय के कला वर्ग के किशोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सरकारी एवं निजी विद्यालय के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु जयपुर शहर के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्राएं) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

उपकरण

किशोरों की सामाजिक लब्धि मापने के लिए स्व-निर्मित सामाजिक लब्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षणविधि द्वारा 0.8962 प्राप्त हुई।

सांखियकी प्रविधियां

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं विवेचना

प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणामों को निम्नांकित तालिका 1, 2 एवं 3 में दर्शाया गया है।

तालिका-1

सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के किशोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	समूह	विद्यार्थियों की संखया	मध्यमान	प्रमापविचलन	क्रांतिकअनुपात	सार्थकअन्तर
1	छात्र	75	149-44	11-59	0-30	.5 स्तर पर असार्थक
2	छात्रा	75	150-48	10-91		

तालिका 2

निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के किशोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	समूह	विद्यार्थियों की संखया	मध्यमान	प्रमापविचलन	क्रांतिकअनुपात	सार्थकअन्तर
1	छात्र	75	148-15	10-65	1.49	.5 स्तर पर

E ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2018

2	छात्रा	75	152-17	9-42		असार्थक

तालिका- 3

सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के किशोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	समूह	विद्यार्थियों की संखया	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकअन्तर
1	सरकारीविद्यालय	150	148-80	11-23	0.130	.5 स्तर पर असार्थक
2	निजीविद्यालय	150	150-16	10-22		

उपर्युक्त तालिकाओं के गहन निरीक्षण उपरान्त स्पष्ट होता है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग के किशोर छात्र एवं छात्राओं, निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के किशोर छात्र एवं छात्राओं तथा सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक मूल्य सांखियकीय दृष्टि से .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक हैं।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि विद्यालय के प्रकार एवं लिंग भेद का विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः पूर्वनिर्मित शून्य परिकल्पना एवं निजी विद्यालय के कला वर्ग छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत होती है।

इसका प्रमुख कारण आज सरकारी एवं निजी विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता का विकास समान रूप से करता है। आज विद्यार्थी साप्ताहिक तथा मासिक पत्र पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों का समान रूप से अध्ययन करते हैं, जो विद्यार्थियों की सामाजिक जागरूकता को आधार प्रदान करते हैं।

शैक्षिक उपयोगिता

वर्तमान प्रतियोगिता व ज्ञान के विस्फोट के युग में जब प्रत्येक विद्यार्थी अपने समाज, भविष्य व कैरियर के प्रति जागरूक होकर विचार-विमर्श कर रहा है, तो इस समय में प्रस्तुत शोध की उपयोगिता सर्वाधिक है। इसका लाभ विद्यालय, कक्षा शिक्षक के दौरान विद्यार्थियों को हो सकेगा। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी तथा अध्यापक सामाजिक लब्धि के प्रति चेतना से प्रोत्साहित होंगे। विद्यार्थी भी समाज के प्रति अपने कर्तव्य का विकास कर सकेंगे। इस शोध के अध्ययन के पश्चात शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों में भी समाज के प्रति चेतना का विकास हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

- *डीगंरा रजनी, "कनक्टीवीटी ऑफ म्फ एण्ड ऍफ़ ए स्टडी ऑफ कश्मीरी माईग्रेंट यंग वूमन, जम्मू (2005)*
- *ट्रेवरहर्वसेन, कक्ष कक्ष में भावात्मक एवं सामाजिक वातावरण को समझने के लिए एक अध्ययन" यूनिवर्सिटी टेक्सास (2004)*
- *गुप्ता एस, उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोरियों में सामाजिक प्रबन्ध का एक अध्ययन', पी.एचडी.*
- *ए.मोदक ए., पहाडी क्षेत्र में नेपाली औरतों का सामाजिक बदलाव तथा शिक्षा का एक अध्ययन, पी.एचडी.*
- *पण्डे.एस., उच्च स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों का समाजनीति सितारा एवं सामाजिक लब्धि का एक अध्ययन. अवध विश्वविद्यालय*